पितृ दिवस

कहानी संग्रह

सुरेखा नवरत्न

आलोक प्रकाशन

पितृ दिवस

(कहानी – संग्रह)

C- 2021 सुरेखा नवरत्न

आलोक प्रकाशन

अपनी बात

प्रिय पाठकों, अभिवादन

बाल कविता संग्रह ई बुक के बाद मेरा यह प्रथम कहानी संग्रह आपको समर्पित है |

कविता और कहानियों के प्रति मेरा झुकाव पढ़ाई के समय से ही रहा है लेकिन सही मुकाम नहीं मिल पाया | शादी के बाद पारिवारिक व्यस्तता और भी बढ़ गई | कोरोना काल में स्कूल बंद होने के कारण जैसे मेरी कलम को गति मिल गई , और मैं अपने वास्तविक और काल्पनिक दुनिया को फिर से जीने लगी | यूँ तो मेरी कई कहानी और कविताएँ पृथक-पृथक रूपों में अमर उजाला एवं अन्य पत्र पत्रिकाओं में छपती रही है | लेकिन आज आलोक प्रकाशन के माध्यम से इसे एक नया आयाम मिला | मेरी लेखन सफ़र की असली शुरुआत हुई है | मुझे पढ़ कर मेरी मनोबल बढ़ाने के लिए आप लोगों का बहुत – बहुत आभार |

-सुरेखा नवरत्न

भूमिका

इंसान के जीवन में जाने कितने मोड़ आते हैं हरेक मोड़ पर जाने कितने पड़ाव पार करते हैं | और हर पड़ाव से हमें अनगिनत अनुभव प्राप्त होते हैं | इन्हीं पारिवारिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और काल्पनिक दुनिया से ही कहानीयो का भी जन्म होता है | कहानी कभी भी पूर्ण काल्पनिक नहीं हो सकती | कहीं न कहीं इसमें यथार्थ का समावेश अवश्य होता है |

"पितृ दिवस" कहानी संग्रह में सामाजिक जीवन से संबंधित मार्मिक कहानियाँ हैं | चूंकि मेरा बचपन मेरे वृद्ध परनाना- नानी के छाया में पल्लवित हुई है इसलिए मेरी कहानियाँ भी ज्यादातर वृद्ध जनो के ईर्द-गिर्द घूमती है इस संग्रह में "उम्मीद"....," पितृ दिवस," "मेरी नानी", "जूता."..... वृद्ध जनो को समर्पित है | मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक आपका मनोरंजन अवश्य करेगी , और बुजुर्गों के बारे में सोचने के लिए भी मजबूर कर देगी |

धन्यवाद

-सुरेखा

अनुक्रमणिका

1 .पितृ दिवस..... 6-10

2. मृत्यु का भय......... 11-15

3. उम्मीद (एक बूढ़ी माँ की)........ 16-18

4. पछतावा........ 19-24

5 मेरी नानी...... 25-31

6. एक अनोखी दुनिया...... 32-38

7. बेजुबान की ममता........ 39-46

8. ईमानदारी का फल.. 47-53

9. संतान भी काम न आया........ 54-59

10.वो मुलाकात..... 60-64

11 वो बरगद का पेड़...... 65-69

12.जूता (एक हमसफर) 60-78

13.मिटकू...... 79-84

14.किटी पार्टी.... 85-90

15 . मन का डर....... 91-96

16 मददगार युवक...... 97-102

पितृ दिवस

आज राहुल को जल्दी ऑफिस जाना था | सुबह सुबह नहा धोकर फ्रेश हुआ, नाश्ता किया और के लिए निकल गया | उसके ऑफिस चले जाने के बाद गीता ने अपने दोनों बेटों को जगाया|

मोनू, शानू से कहा- जल्दी उठो! सुबह के आठ बज गया, पापा तैयार होकर ऑफिस भी चला गया, तुम लोग कब उठोगे, जल्दी उठो, तैयार हो जाओ | हम लोग पापा के लिए खरीददारी करने जाएंगे | आज फादर्स डे है ! तुम्हारे पापा के लिए तोहफा खरीदना है इतना सुनते ही मोनू और शानू झट से उठ गए|

मम्मी आपने पहले क्यों नहीं बताया, कह कर जल्दी से नहा धोकर तैयार हो गए गीता आंगन वाले कमरे की ओर गई, और दादाजी से कहा-ए बुड्ढे! ये लो तुम्हारा खाना, खा लेना! हम लोग बाहर जा रहे हैं| मैंने घर में ताला लगा दिया है, कहीं जाना होगा तो पीछे वाले दरवाजे से चले जाना | दादाजी ने ठीक है बहू! कहकर खाने का बर्तन अंदर रख लिया|

चलो बच्चों! कहते हुए, तीनों बाहर चले गए | गीता ने सबके लिए कपड़े खरीदी, पापा के लिए स्पेशल गिफ्ट पैक कराई, खाने पीने की बहुत सारा सामान खरीदे | रात के खाना के लिए मटन खरीदा और घर वापस आ गए | कमरे का ताला खोला, सामान रखा और डिनर की तैयारी में लग गई|

रात के भोजन में गीता ने मटन करी बनाई, मटन की खूशबू दादाजी के कमरे तक जा रही थी | दादाजी मन ही मन सोच कर खुश हो रहा था , बहु आज स्पेशल मटन करी पका रही है बहुत दिनों के बाद मुझे भी मटन करी खाने को मिल जाएगा | रात के खाने में अभी बहुत समय बांकी था शाम के पांच बजे थे |इसलिए दादाजी अपने बुजुर्ग साथियों के साथ

गली वाली चबूतरे में बैठने चला गया | चबूतरा में दादाजी के कई दोस्त आया करते थे | सब बुजुर्ग साथी अपना सुख दुःख बतियाते , उन लोगों का समय गुजर जाता और मन भी बहल जाते थे|

शाम को राहुल ऑफिस से घर आया, शानू और मोनू ने पापा को उनका स्पेशल गिफ्ट दिया| सबने मिलकर मिठाईयाँ खाए, डिनर किया, और खुशियाँ मनाए | किसी को दादाजी का खयाल नहीं आया|

इधर रात होने से पहले दादा जी के सभी साथी अपने- अपने घर चले गए, दादा जी भी धीरे -धीरे घर आया | दरवाजे की कुंडी खोला , घर में बेटे, पोते और बहू खाना खाकर कमरे में टीवी देख रहे थे, बच्चे संगीत सुन रहे

थे | दादा जी को बहुत भूख लग रही थी, बहू खाना लेकर आएगी सोचकर वह बेचारा दरवाजे की ओर ताक रहा था | तब तक रात के नौ बजे चुके थे|

गीता ने आंगन के तरफ़ का दरवाजा अंदर से बंद कर दिया|

दादाजी ने अपने खाट के नीचे झांक कर देखा, नीचे में खाने का बर्तन रखा हुआ था| ढक्कन खोलकर देखा तो उसके अंदर भिंडी की सब्जी और चावल रखा हुआ था | खाना बहुत ठंडी हो चुकी थी, शायद सुबह का बचा हुआ था |दादाजी ने खाना खाया और अपनी चादर ओढ़ कर चुपचाप सो गया... |

मृत्यु का भय

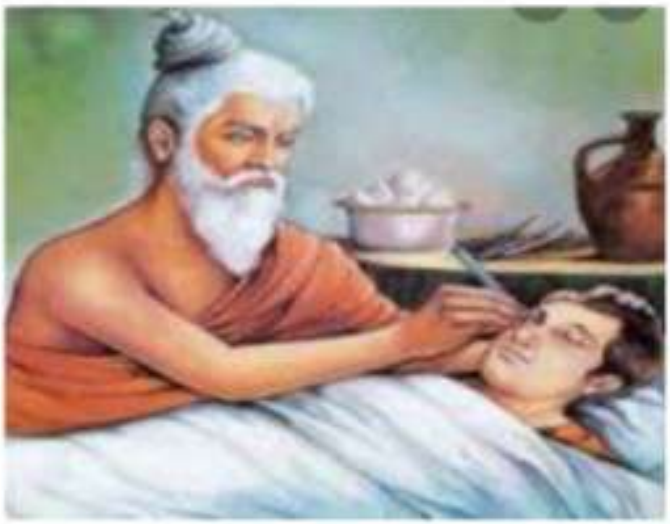

इंसान भले ही कितना भी निडर हो, दुनिया में वह किसी भी जीव जंतु, जोखिम, परेशानी, या खतरनाक लोगों से नहीं डरता हो | लेकिन वह एक चीज़ है जिससे अवश्य ही डरता है और वह

है "काल"| मृत्यु के नाम से हरेक व्यक्ति के भीतर एक अनजान सा डर उत्पन्न हो जाता है|

एक दिन मानसिंह नाम का व्यक्ति अपने खेत पर लगे फसल को देखने के लिए गया हुआ था | वह मानपुर गाँव का जमींदार था| खेत में इस बार फसल कैसा हुआ है ये जानने के लिए वह खुद देखने जाया करता था | पूरे गाँव का जमीन उसी का था | वह गाँव का सबसे बड़ा पूंजीपति आदमी था | गाँव के सभी लोग उसके खेत में काम करते थे | मानसिंह फसल का एक तिहाई हिस्सा खुद रख लेता था और मजदूरों को बहुत ही कम अनाज दिया करता था | मजदूर कुछ बोलते तो उन्हें बदले में कोड़े का मार मिलता था | वह किसी से भी नहीं डरता था|

एक बार वह अपने घर के बगीचे मे टहल रहा था, तभी एक जहरीले सांप ने उसे काट लिया | वह जोर - जोर से चिल्लाया, अरे! अरे! देखो सांप ने मुझे काट लिया | घर के लोग दौड़े दौड़े आए | गांव के सारे लोग भी इकट्ठे हो गए |

उसमें से एक आदमी दौड़कर वैद्य को बुला लाया| इतने में जमींदार को पूरा बेहोशी छा गया वैद्य बहुत ही नेक और समझदार आदमी था | उसे पता था कि सेठजी का जान बच जाएगा, फिर भी उसनें यह स्वांग रचाया |

सोचा यह आदमी हमारे गाँव के सभी लोगों परेशान करता है | यही मौका है इसे सुधारने का| उसनें अपना मंत्र का किताब निकाला और आधी बेहोश हुए सेठजी से कहा |

सेठजी आपके कुंडली में कालसर्प दोष है | जो आपको जीवित रखना नहीं चाहता, आपको मार देना चाहता है|

सेठ मानसिंह को जैसे अब मृत्यु का द्वार दिखाई देने लगा| उसने डरते हुए, वैद्य से कहा वैद्य जी आप मेरी जान बचा लिजीए| जान के बदले में मैं आपको अपनी पूरी संपत्ति दे दूंगा | वैद्य ने अपनी पोथी पलटकर सिर हिलाते हुए कहा | सेठ जी एक उपाय है जिससे आपकी जान बचाया जा सकता है | आपको तालाब के पार में शेषनाग का मंदिर बनवाना पड़ेगा और गाँव के सभी लोगों को उनके जमीन लौटाना पड़ेगा | उनके जमीन ले लेने के कारण ही शेषनाग भगवान आपसे नाराज है | सेठ मानसिंह ने काल के भय से स्वीकृति में सिर

हिला दिया |वैद्य जी ने जल्दी से जड़ी बूटी सूंघाई और सेठ जी बिल्कुल ठीक हो गया | अब सेठ जी पूरी तरह से बदल चुका था, उसने सभी किसानों को उनकी जमीन लौटा दिया और एक बहुत बड़ा शेषनाग का मंदिर बनवाया | वह प्रतिदिन सुबह शाम मंदिर में पूजा करता था|

अब गाँव में सब उनका सम्मान करते थे |

उम्मीद

एक बूढ़ी माँ की...

बुधमती बूढ़ी हो चुकी थी कि दो वक्त का खाना पकाना उनके लिए मुश्किल हो गया था| बुधमती लगभग तीस वर्षों से घर में अकेली ही रहती थी | तब राजन

मात्र एक साल का था | उनके पति बुधराम को परलोक सिधारे तीस बरस बीत चुका था. पति के चले जाने के बाद बुधमती ने बहुत संघर्ष करके बेटे का लालन पालन किया |उनके पास एक एकड़ जमीन था, जिस पर वह जी तोड़ मेहनत करती और फसल उगाती | लेकिन राजन को किसी बात की कमी नहीं होने देती| राजन पढ़ाई में होशियार था| उसने मैट्रिक पूरी कर लिया और आगे की पढ़ाई करने के लिए माँ से शहर जाने की बात कही | माँ ने खुशी खुशी उसके भविष्य के लिए उन्हें शहर भेज दिया |कालेज में दो वर्ष पढ़ाई करने के बाद राजन को एक ऑफिस में बाबू की नौकरी मिल गया| माँ ने पूरे मोहल्ले में खुशी से मिठाई बांटी | शुरू में तो राजन माँ को देखने घर आया करता, उनके लिए साड़ियां और

चप्पल लाया करता | एक दिन उसने अपने ऑफिस में ही काम करने वाली रीता नाम की लड़की से माँ को बिना बताये शादी कर लिया और बुधमती से मिलाने गाँव लेकर आए| माँ ने बेटे की पसंद और खुशी है कहकर कुछ नहीं कहा, बहुत खुश हुई| दो दिन रुकने के बाद बेटा अपनी बहू के साथ शहर चला गया | उसके बाद वह आज तक नहीं आया |धीरे -धीरे समय के साथ माँ बूढ़ी होती गई, आज वह एक दम थक चुकी है| कभी एक समय खाना खाती है कभी भूखी सो जाती है|

अपने घर के छोटी सी चबूतरा पर बैठ कर वह उम्मीद भरी नजरों से गली की ओर ताकती रहती है...

पछतावा

राहुल अपने ऑफिस के कुछ जरूरी फाइलों के काम में व्यस्त था । उसका मोबाइल टेबल के ऊपर रखा हुआ था । बीच में यही कोई चार बजे लगभग उसमें थोड़ा सा रिंग बजा । लेकिन काम होने के कारण उसका ध्यान मोबाइल से हट गया था ।

आज ऑफिस में कुछ ज्यादा ही काम था। दरअसल उसके ऑफिस में कल नया मैनेजर आने वाला है। इसीलिए राहुल अधूरी फाइलों को पूर्ण कर रहा था। शाम के साढ़े सात बज चुके हैं। राहुल अभी तक घर नहीं गया है। जैसे ही उसका काम पूरा हुआ। वह अपना मोबाइल जेब में रखा। बैग उठाया और अपने मोटर साइकिल से करीब आठ बजे वह घर पहुँच गया | घर पहुंचते ही सबसे पहले वह नहाकर फ्रेश हुआ|

माँ ने खाना लगाया और वह खाना खाकर बिस्तर पर लेटकर टीवी देखने लगा। टीवी देखते - देखते उसकी आंख लग गई। टीवी चालू ही रहा। रात को लगभग बारह बजे अचानक नींद खुली गई। अरे! आज मैं टीवी बंद नहीं कर पाया

था, कहकर टीवी बंद किया ।अब बीच में नींद खुल जाने के कारण उसे दोबारा नींद नहीं आ रही थी ।

राहुल अपना मोबाइल हाथ में लेकर बैठ - बैठे देखने लगा. उसके मोबाइल में लगभग चार बजे किसी नये नंबर से दो बार मिस्ड काल आया हुआ था ।राहुल ने सोंचा ये किसका नंबर है ।कब फोन बजी थी मुझे तो पता ही नहीं चल पाया था ।अभी आधी रात को रिप्लाई में मैं फोन नहीं लगा सकता, खैर ! सुबह लगाकर देखूंगा । किसका नंबर है, और वह सो गया ।

राहुल अभी सो कर उठा भी नहीं था ।कि लगभग पांच बजे उसकी मोबाइल की घंटी बजने लगी । राहुल जल्दी से फोन उठाया ।हलो! कौन?

उधर से किसी महिला की आवाज आई, क्या आप राहुल बोल रहे हैं ! राहुल ने जवाब में कहा- हां मै ही हूँ । आप कौन है ? कहाँ से बोल रहे हैं? महिला ने कहा - क्या आप राजेश को जानते हैं? कल शाम को उसका एक्सिडेंट हो गया था । उसके सर से बहुत खून बह गया था । उसका ब्लड ग्रुप ओ नेगेटिव था । जो कि बहुत ही कम पाया जाता है । समय पर उसको खून नहीं मिल पाया और आज । अभी उसका देहांत हो गया है । हम उसके किसी परिजनों को नहीं जानते, उसके मोबाइल में आपके नंबर में सबसे ज्यादा उनकी बात हुई थी ,इसलिए हमनें आपसे संपर्क किया । आप जल्दी ही जिला अस्पताल भोपाल आ जाइए ।

इतना कहकर उसने फोन रख दिया । राहुल के ऊपर तो जैसे बिजली गिर पड़ी हो । ह जल्दी से उठा । कपड़े पहने, छः बजे का ट्रेन पकड़ कर भोपाल के लिए रवाना हो गया ।

राहुल अपना मोबाइल हाथ में रख कर देख रहा था । अभी जिस नंबर से फोन आया था । उसी नंबर से कल चार बजे भी दो बार मिस्ड काल आया था । राहुल और राजेश बचपन से दोस्त थे । एक साथ बड़े हुए, एक साथ पढ़ाई भी किए थे । राजेश इंजीनियर की पढ़ाई के लिए भोपाल गया हुआ था, मुझे याद आया आज से पांच साल पहले एक बार मैं बीमार हो गया था । तो मुझे खून की कमी हो गई थी । और राजेश ने ही मुझे खून दिया था । तभी मुझे पता चला था कि हम दोनों का ब्लड ग्रुप ओ नेगेटिव है,

जो बहुत ही कम लोगों की होती है । काश मैंने कल फोन उठा लिया होता तो शायद मेरे दोस्त का जान बचा गया होता । वह अपने माता -पिता का इकलौता संतान था । अभी उन लोगों को पता भी नहीं है । मैं अंकल आंटी को उसके बारे में कैसे बताऊंगा?

मैंने कल फोन क्यूँ नहीं देखा... वह बार- बार पछता रहा था । और अपने मोबाइल में राजेश का फोटो बार -बार देख रहा था । उसके आंखों से लगातार आंसू बह रहे थे ।

मेरी नानी

नानी मैं सहेलियों के साथ चौक में खेलने जा रही हूँ । मुझे बुलाने मत आना|

। मैं खेलने के बाद जल्दी ही वापस आ जाऊंगी । सा कहते हुए शाम को पांच बजे सीमा बाहर चली जाती है । अंदर से नानी की आवाज आई| बेटी अंधेरे होने से पहले घर आ जाना ।

आजकल गर्मी के दिनों में सांप बिच्छू का डर लगता है | लेकिन सीमा की नानी की बात सुनने की फुर्सत कहाँ थी |

वह तो जैसे पंख लगाकर वहाँ से फुर्र हो चुकी थी | दर असल सीमा बहुत छोटी थी, करीब - करीब दस महीने की रही होगी | तब से वह नानी- नाना के पास रहती थी | माँ जब दूसरी बार गर्भवती हो गई, तभी से सीमा की देखभाल सही से नहीं कर पा रही थी | इसी कारण उसे अपने मायके में नाना- नानी के पास छोड़ गई थी |

तब से अपने नानी- नाना की जान थी वह, उसे तो अपने माता- पिता का

स्मरण भी नहीं था | नानी- नाना ही उनके माता-पिता थी | नानी- नाना के और कोई औलाद भी नहीं था | सीमा ही
उनके लिए सब कुछ थी | लेकिन कहते हैं नानी के घर रहकर बच्चे ज्यादा लाड दुलार पाकर...

उद्दंड हो जाते हैं | सीमा उद्दंड तो नहीं थी लेकिन थोड़ा जिद्दी जरूर
हो गई थी | अपने नानी की एक नहीं सुनती थी | किसी भी काम में उनका हाथ नहीं बनाती थी |
बात- बात पर उसे डांटती और गालियाँ देती थी | नानी उनके गाली की कभी बुरा नहीं मानती थी |

हंसती रहती, तू नहीं रहती तो मुझे गाली देने वाला भी कोई नहीं रहता |

इधर सीमा अपने सहेलियों के साथ बाड़ा में लुका छुपी खेल रही थी | खेलते खेलते उन्हें समय का ध्यान ही नहीं रहा |अंधेरा होने लगा, शाम के साढ़े छः बज गए | नानी को सीमा की चिंता होने लगी |

वह गली के चबूतरे पर बैठे एक टक गली की तरफ देख रही थी | जब सीमा दिखाई नहीं दिया तो उसने लालटेन उठाया पैरो में अपनी पुरानी चप्पल पहनी और गली की ओर चल पड़ी | बाड़े

के पास जाकर देखी तो अभी भी सभी लड़कियां खेलने में मगन थे |

नानी को लालटेन हाथ में पकड़े हुए देख उनके सहेलियाँ हंसने लगे |उनमें से एक लड़कियों ने मजाक उड़ाते हुए कहा- अरे! सीमा, देख- देख तेरी नानी लालटेन लेकर तुम्हें बुलाने आई है |और जोर -जोर से सभी लड़कियां हंसने लगीं | सीमा को बहुत बुरा लगा लेकिन सहेलियों के

हंसने पर उसे नानी पर बहुत गुस्सा आया | उसने नानी को खरी खोटी सुनाई, गालियाँ दी और बड़बड़ाते हुए आगे- आगे चलने लगी |

तुम्हें क्या जरूरत थी लालटेन लेकर आने की | बिना लालटेन के भी तो आ सकती थी | मुझे बुलाने क्यूँ आए, मैं खुद ही आ गई होती | नानी ने मुस्कुराते हुए कहा - बेटी अंधियारी रात है चंदा भी नहीं निकलता | आजकल रास्ते में बहुत अंधेरा रहता है, अब ऐसे रात तक बाहर में नहीं रहते |

रात में जब खाना खाकर सब सो गए, तो सीमा को नींद नहीं आ रही थी | बुढ़ापे और दिन भर

की थकान के कारण नानी जल्दी सो गई | तब सीमा मन ही मन सोचने लगी | मेरे सभी सहेलियों अपने -अपने माता पिता के साथ रहते हैं, लेकिन अंधेरा और बहुत समय हो जाने के बाद भी उन लोगों को बुलाने कोई नहीं आया | लेकिन मेरी नानी मुझे कितना प्यार करती है | वह इतनी कमजोर और बुढ़ी हो जाने के बाद भी अंधियारी रात में मुझे लेने पहुंच गई | मेरी नानी को मेरी कितना चिंता रहती है |और मैं हमेशा उसे परेशान करती हूँ गालियाँ देती हूँ कभी किसी काम में मदद नहीं करती | सीमा की आंखें भर आई | वह अपने नानी को बड़े प्रेम से देखती रही....

एक अनोखी दुनिया

चारों तरफ सोने चांदी से जड़ा बहुत ही भव्य महल बने हुए थे| मेरी आंखों को यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैं ये क्या देख रही हूँ, मैंने कमरे में लगी रेशमी पर्दा हटाकर देखा चारों तरफ़ आलीशान महल

एक कतार में बना हुआ था |और उस पर मछलियां भी तैर रही थी |आश्चर्य लग रहा था ये सब पानी के अंदर है मैं भी पानी के अंदर आ गई हूँ, पानी के अंदर एक सोने की नगरी बनी हुई है कोई भी डूब नहीं रहा, मैं भी नहीं, ये क्या माजरा है ?मैं कहाँ आ गई हूँ | मैंने महल से बाहर जाने के लिए दरवाजा खोलना चाहा, दरवाजा मेरे छूने से पहले ही खुल गया और एक खूबसूरत सी कन्या अंदर आई|
सर झुका कर मेरा अभिवादन किया और कहा अतिथि की जय हो! आप हमारे स्वर्ण नगर के अतिथि हैं | महारानी ने आपका खयाल रखने के लिए हमें भेजा है | अगर आपको किसी भी चीज की आवश्यकता होगी तो हम आपको हर वस्तु हर चीज उपलब्ध कराएंगे|

अभी आप सोकर उठे हैं कृपया नहा धोकर तैयार हो जाइए हम आपके भोजन का प्रबंध करते हैं|

ऐसा कहकर वह किशोरी चली गई| मैं उस कन्या के कहे अनुसार नहा धोकर तैयार हो गई | मेरे निकलने से पहले वह कन्या मेरे लिए भोजन लेकर आ गई | उसनें मुझे भोजन करने की आग्रह किया | पहले - पहले तो मुझे डर लग रहा था, फिर मुझे

भूख भी लगी थी | खाने की थाली देखकर मुझे रहा नहीं गया |मैंने पूरी जिंदगी में ऐसा भोजन नहीं खाया था | एक बड़ी सी सोने की थाली में बत्तीस प्रकार का व्यंजन सजाकर लाई थी | मैंने किशोरी से कहा तुम अब जाओ और खाने की थाली पर टूट पड़ी | भरपेट भोजन किया, और आराम करने लगी, मेरे मनोरंजन के लिए कमरे में कई साधन थे ,राजा महाराजाओं की तरह सामग्री उपलब्ध थे वह किशोरी

फिर कमरे के अंदर आई और बोली आपको शतरंज खेलने के लिए किसी दासी की आवश्यकता होगी तो मैं भेज देती हूँ | मैंने कहा नहीं नहीं उसकी कोई आवश्यकता नहीं है | वह फिर चली गई | इसी तरह से एक सप्ताह बीत गया मुझे अपने घर बार का खयाल ही नहीं आ रहीं थी | बहुत मजा आ रहा था, मैं तो हमेशा के लिए यहीं रहना चाहती हूँ भला इतना आलीशान महल और ठाठ की जिंदगी छोड़ कर बाहर की दुनिया में कौन जाना चाहेगा|

एक सप्ताह बीत जाने के बाद मेरे मन में विचार आया | यह नगर इतना भव्य है, और मेरा इतना खयाल क्यों रखा जा रहा है | मैंने कमरे से बाहर जाकर नगर भी नहीं देखा है इस नगर का राजा कौन है | आज मैं अवश्य बाहर जाकर देखूंगी|

सुबह तैयार होकर होने के बाद, भोजन किया और उस किशोरी से बोली- कन्या मैं तुम्हारे नगर के राजा से मिलना चाहती हूँ उसका दर्शन करना चाहती हूँ | किशोरी ने कहा क्यों नहीं? इस नगरी में राजा नहीं, महारानी राज करती हैं | बिल्कुल ! आप मेरे साथ ही चलिए | मैं उसके पीछे -पीछे चलने लगी, नगर की सुंदरता देखकर मैं आश्चर्य में थी | सोने चांदी से जड़े बड़े -बड़े महल, पानी में तैरती रंगीन मछलियाँ , वहाँ के लोग भी सोने चांदी के गहनों से लदे हुए | मैं सोच रहा था ये दुनिया तो बड़ी सुंदर है ,भला इसे छोड़ कर मैं वहाँ क्यूँ जाना चाहूँ?

नगर के सारे लोग आंखें फाड़ -फाड़ कर मुझे देख रहे थे और अभिवादन कर रहे थे | मैंने महल में प्रवेश किया तो अंदर का नजारा देखकर दंग रह गई| महारानी की शक्ल हूबहू मेरी शक्ल से मिलती थी |महारानी सिहांसन पर बैठी थी वह हीरे

और रत्नों से जड़ित गहनों से लदी हुई थी | मुझे उसके सामने ले जाया गया| अब मेरे अगल बगल में हथियार लिए दो सिपाही खड़े हो गए

महारानी ने मुझे देखते ही कहा-आओ ! सोनमती आओ !

मैंने महारानी का अभिवादन किया | मैंने महारानी से पूछा आपको मेरा नाम कैसे पता ? और मैं इस लोक में कैसे आ गई | हमें सब मालूम है, धरती पर हमारे विषेश गुप्तचर रहते हैं, उसी ने हमें बताया कि पृथ्वी पर हूबहू हमारी तरह ही शक्ल की और नाम की कोई रहती है | इसलिए तुम्हें यहाँ लाया गया है |महारानी ने कहा तुम ही धरती से आए अतिथि हो, अब तुम्हारी खातिरदारी बहुत हो गई, इस ब्रह्माण्ड में केवल एक ही सोनमती महारानी रहेगी|

इसलिए तुम्हें अब मरना होगा | तुम अब जीवित नहीं रहोगे |तुम लोग हमारे पवित्र समंदर के दुनिया को दूषित करते हो |

सिपाही !इसका सर धड़ से अलग करके मगरमच्छों को खिला दो| सिपाहियों ने जी महारानी कहकर जैसे ही तलवार उठाया, मेरी नींद खुली गई | मेरा शरीर कांप रहा था मैं पूरी तरह से पसीने से लथपथ हो चुकी थी | मैंने आसपास नजर दौड़ा कर देखा, तो अपने कमरे में थी अपने वास्तविक धरती में|

मेरी जान में जान आई | मैं समझ गई मैं सपनों की काल्पनिक दुनिया में चली गई थी|

बेजुबान की ममता

बात उन दिनों की है जब हम लोग पहली बार अपने शहर वाले घर में रहने आए | हमारा घर मुहल्ले के आखिरी छोर में था | अभी पूरी तरह से तैयार नहीं हो पाया था | अहाता निर्माण कार्य चल रहा था | उस मुहल्ले में एक काले रंग की

कुतिया रहती थी, सुबह शाम हमारे घर के आसपास घूमा करती | उसे पाला तो किसी ने नहीं था, लेकिन मुहल्ले के हर एक घर से उसे कुछ न कुछ खाने को मिल जाता था |

वह चौंक में रहती और पूरे मुहल्ले का रखवाली किया करती थी| मेरे बच्चे
उनके साथ खेलते, उनके साथ दौड़ते | बच्चे उनके साथ खेल कर बहुत खुश होते, अब तो बच्चों ने उसे प्यार से टिमी नाम भी दे दिया था| मैं भी उसे टिमी बेटा कहा करती |
टिमी अपना नाम जान गई थी, एक बार बुलाने से वह दौड़कर चली आती |
बच्चों को उनका दुम हिलाना बहुत पसंद था |

टिमी और कुत्तों से बहुत अलग थी, वह बहुत समझ दार और वफादार थी|

घर के अंदर कभी नहीं आया करती | भूख लगने पर दरवाजे के चौखट में अपना सिर टिकाकर कातर भरी नजरों से देखती रहती|

घर के किसी भी सदस्य को देखती अपना कमर और पूंछ जोर जोर से मटकाती |

बच्चे उन्हें पूंछ हिलाते देखते तो बहुत खुश होते | और उन्हें खाने की चीजें देते |

टिमी अब धीरे - धीरे बड़ी हो गई.....

और उसने पांच पिल्लों को जन्म दिया | अब तो बच्चे और भी ज्यादा देखभाल करते, उनके छोटे- छोटे पिल्लों के साथ खेला करते |

एक दिन टिमी का छोटा पिल्ला , सड़क पार कर रहा था, तभी अचानक तेज गति से आ रही मोटर साइकिल के नीचे आ गया|
टिमी एकदम बौखला गई और हर आने जाने वालों को दौड़ाती |

टिमी के और पिल्ले अपने मरे हुए भाई के पास जाते, जैसे उसे उठाने का प्रयास कर रहा हो.....
कुछ दिन बाद सब..... सब हंसते खेलते खुश थे, तभी.....

रात का समय था, मुहल्ले में शांति थी |सब गहरी नींद में सो रहे थे, अचानक गली में जोर

जोर से बहुत सारे कुत्तों के रोने की और भौंकने की आवाज सुनाई देने लगी | मैंने बाहर का दरवाजा खोला, बाहर अंधेरा था इसलिए लालटेन लेने अंदर गई

और बाहर जाने के लिए जैसे ही मुड़ी...!
टिमी मेरे सामने खड़ी थी, बेतहाशा, डरी हुई सहमी हुई.. ऐसे देख रही थी
जैसे मुझे बाहर जाने के लिए बुलाने आई हो, उसने अपने मुंह से मेरा पल्लू पकड़ा....

दौड़कर उसके साथ बाहर गई, सारे बहशी कुत्ते तो भाग गए| बाहर का हाल देखकर मै स्तब्ध रह गई, चारो पिल्लों का शरीर क्षत- विक्षत पड़ा था | टिमी तो जैसे अपने बच्चों को

इस तरह देखकर दर्द और तकलीफ से बेजान सी लग रही थी, उनके दर्द को बयां करना मुश्किल है.....
जैसे उसके ऊपर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो, मेरा टिमी कभी एक पिल्ले के पास जाती, उसे सूंघती. कभी दूसरे पिल्ले के पास जाती, उसे चाटती | तीसरे के पास जाती, दर्द
भरी आवाज से कराहती. चौथे के पास जाती, रोती | और फिर मेरे पास आती.....

और शायद ये कहती, देखो न अम्माँ ये मेरे बच्चों को क्या हो गया?
अम्माँ कुछ करो न! ये क्या हो गया?
उसके आंखों से आंसू के धारे बह रहे थे ,

उनके पिल्लों का हाल तो जैसा था वैसा था, लेकिन मैं टिमी को देखकर....

उनकी तड़पती, रोती और कराहती ममता को देखकर फूट- फूट कर रो पड़ी|

टिमी के तीन पिल्ले वही पर मर गए, एक पिल्ला घायल था | मैंने उनके चोंट पर दवाई लगाई | दो दिनों तक वह पिल्ला कराहता रहा | जब उनके ठीक होने कि उम्मीद नहीं दिखा तो मैंने उसे टोकरी में उठाकर घर से दूर जाकर छोड़ दिया |

अब टिमी बहुत उदास रहने लगी उसनें कई दिनों तक कुछ भी नहीं खाई |

उस आदमी ने बताया कि टिमी अपने मरे हुए बच्चों को खा रही थी | मैं सोच रही थी.....

क्या सचमुच ... ? वह टिमी पागल हो गई है? या.....

ममता के वशीभूत होकर..... ऐसा कर रही थी..... पता नहीं|

ईमानदारी का फल

एक गाँव में दो भाई रहते थे | बड़े भाई का नाम हरिराम और छोटे भाई का नाम रामलाल था | हरिराम सीधा- सादा और बड़े ईमानदार इंसान था और वह खेती किसानी करता था | उसका छोटा भाई रामलाल , झगड़ालू और बेईमान आदमी था | रामलाल पशु पालन का काम करता था | रामलाल के पास ढेर सारे बकरियाँ और मुर्गियाँ पाल रखा था | रामलाल को पशुपालन में बहुत
फायदा होता था| फिर भी वह अपने बड़े भाई हरिराम को एक रूपया भी नही देता था| ऊपर से

फसल का आधा हिस्सा लड़ झगड़कर ले लेता था |फिर भी हरिराम उसे छोटा भाई है कहकर कुछ नहीं कहता था |

एक बार गाँव में बहुत कम पानी गिरा जिसके कारण अनाज बहुत कम मिला था| फिर भी रामलाल अपना आधा हिस्सा लेने हरिराम के घर पहुँच गया | बड़े भाई ने कहा - भाई इस साल अनाज बहुत कम हुआ है, मेरे छोटे- छोटे बच्चे भूखे मर जाएंगे, इस बार अनाज मत ले जाओ | तुम्हें तो पशुपालन से मुनाफा हो जाता है, मैं अगले साल तुम्हारा अनाज तुम्हें लौटा दूंगा|

इतने में रामलाल को गुस्सा आ गया और अपने बड़े भाई को गाली गलौज और मारपीट करने लगा, सामान बाहर फेंक दिया|

और तुम लोग यहाँ से जाओ ये घर मेरा है यहाँ तुम्हें रहने नहीं दूंगा | हरिराम सोंचा, हमेशा लड़ाई झगड़ा होते रहने से अच्छा है मैं ही अपना परिवार यहाँ से लेकर चला जाऊंगा | कहकर अपना सामान बांधा और परिवार के साथ शहर की ओर चल पड़े |

शहर में पहुँच कर वह एक सेठजी के दुकान में काम करने लगा |उसकी पत्नी भी उसी सेठजी के घर में झाड़ू बर्तन करने लगी | हरिराम बहुत ही ईमानदारी और मेहनत से काम करता था | उसके काम से सेठजी बहुत प्रभावित हुआ और बहुत ही जल्दी वह सेठजी का सबसे चहेता बन गया | सेठजी खुश होकर हरिराम के बच्चों को सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती कर दिया |

हरिराम की पत्नी कमलाबाई के काम से सेठानी भी खुश हो गई | इस तरह से सुखपूर्वक दिन व्यतीत हो रहा था |

धीरे -धीरे दस बारह साल बीत गया | सेठजी का कोई संतान नहीं था| समय के साथ- साथ सेठ सेठानी दोनों बूढ़े होने लगे |, हरिराम और उसकी पत्नी सेठ-सेठानी का सगे संतान से भी अधिक प्रेम से देखभाल करने लगे | कुछ दिन बाद सेठानी की हृदय गति रूक जाने से मृत्यु हो गई | अब सेठजी अकेला हो गया, अधिक बूढ़ा हो जाने के कारण दुकान का देखरेख भी नहीं कर पा रहा था|

एक दिन सेठजी ने हरिराम को अपने पास बुलाया और कहा- बेटा, तुमनें मेरे औलाद से भी बढ़कर मेरे दुकान को संभाला है,

और हमारी सेवा किया है | आज से यह घर और कारोबार मैं तुम्हारे नाम करता हूँ|
मेरे मरने के बाद भी तू ही मेरा वारिस रहेगा | अपने बीवी बच्चों को लेकर अब तुम इस घर में रहो| इस तरह से हरिराम का भाग्य खुल गया| इधर गाँव में हरिराम का छोटा भाई रामलाल को बड़ी विपत्ति पड़ गई थी | गाँव में बीमारी फैल जाने के कारण उसका धंधा चौपट हो गया था | बकरियों और मुर्गियाँ मर गए थे | रामलाल को खेती किसानी और कुछ काम करना भी नहीं आता था| खाने के लाले पड़ने लगे |

किसी तरह से उसे हरिराम के बारे में पता चल गया था, की बड़ा भाई शहर जाकर सेठजी बन गया है| रामलाल के मन में भैया के पास जाने का विचार किया| सुबह वह अपनी

बीवी से कहा- मैं बड़े भैया से मिलने शहर जा रहा हूँ, वह मुझे जरूर माफ़ कर देगा | आखिर वो मेरा बड़ा भाई है, और वह सुबह के बस से शहर चला गया|

शहर पहुँच कर उसने, दरवाजा खटखटाया | अंदर से एक हट्टा कट्टा पगड़ी वाला नौजवान आदमी दरवाजे के सामने आया| रामलाल डर गया कहीं मैं गलत पते पर तो नहीं आ गया और वह पीछे मुड़ने लगा | लेकिन हरिराम ने अपने छोटे भाई को पहचान लिया नहीं | भाई तुम सही पते पर आये हो कहकर उसे गले से लगा लिया | उसे घर के अंदर लेकर खातिरदारी किया | गाँव और घर का सारा हालचाल पूंछा , रामलाल ने अपना दुख दर्द

बताया| भाई को दया आ गई और उसने भाई को बहुत सारा धन दौलत देकर विदा किया|

जाते -जाते भाई को ये समझाया |कि किसी का हिस्सा नहीं छिनना चाहिए| हमें अपना काम ईमानदारी और सच्चाई से करना चाहिए | सत्य के रास्ते पर चलने वालों की मदद भगवान भी करता है|

संतान काम नहीं आया

आज सालों बाद सीमा मायके आई, घर में सब भाई- बहन और पूरे परिवार बहुत खुश हुए| दोपहर के खाना खाने के बाद चबूतरा में बैठे इधर-उधर की कुछ- कुछ बातें कर रहे थे| सीमा जब भी घर आती थी या फोन पर बात करती तो अपने मुहल्ले और गाँव के बारे में जरूर पूंछा करती थी | मुहल्ले में किसकी शादी हुई किसके बच्चे हुए हैं, कोई बीमार तो नहीं | गाँव में कौन- कौन मर गए और सारी बातें माँ उसे बताती | दरअसल सीमा बहुत छोटी थी, करीब दस महीने की रही होगी तबसे माँ उसे नानी- नाना के पास छोड़ गई थी | उसके माँ- पिताजी तो सीमा के

शादी के बाद और नानी- नाना के गुजर जाने के बाद यहाँ आए | इससे पहले वे बाहर रहा करते थे | इसी कारण सीमा को वहाँ के इंसान तो क्या कुत्ते बिल्ली के बारे में भी वह पूंछा करती, सच में | फेकन नानी की बिल्ली मर गई है क्या..? अब बदमाशी करने घर नहीं आती | मुहल्ले का झब्बू कुत्ता कैसा है? एक बातों की जानकारी उसे बताओ तो अच्छा नहीं तो माँ से झगड़ा कर डालती | ऐसा लगाव था उसको अपने गाँव की कण-कण से|

माँ ने सबका हाल चाल बताया , उसने चौकीदार चाचा के बारे में भी बताया कि गाँव में बहुत सारे लोग कोरोना से मर गए चौकीदार चाचा को भी कोरोना हुआ था| उसके मरने के बाद उसके आलीशान घर में कोई

नहीं रहता | घर खाली पड़ा हुआ है | उसका बेटा भिलाई नगर में ही बस गए |

सीमा चुपचाप सब बातें सुन रही थी, उसे बचपन की बातें याद रही थी मुझे आज भी याद है-

चौकीदार चाचा के घर में जब उसका बेटा पैदा हुआ था तो उसनें पूरे गाँव में बाजे बजवाये थे | घरों- घर मिठाई बंटवाया था | तब वह हमारे घर भी मिठाई देने आया था | मैं अपने नाना के साथ इसी चबूतरा में खेल रही थी | उसनें मिठाई का डिब्बा नाना को दिया और कहा भैया मेरा बेटा हुआ है, मेरे घर में दीया जलाने वाला मेरा वारिस हुआ है| पांच - पांच बेटियों के बाद मेरा बेटा हुआ है | चौकीदार चाचा के पांच बेटियां थी, उसके बावजूद भी उसने बेटे की चाहत

में दूसरी शादी किया था और उसी से आज उसका बेटा हुआ है | चौकीदार चाचा ने नाना से भी कहा भैया अभी आपका भी उमर बहुत बांकी है आपको भी तो एक ही बेटी है बेटियों की क्या है पराई है बिचारी शादी करके चले जाते हैं, देखो न तुम दोनों भैया-भौजी अकेले रह गए हो | मरने के बाद न कोई कांधा देने वाला होगा न कोई चीता में आग जलाने वाला ,घर में रहने वाला एक वारिस भी तो चाहिए|

मैं वही खड़ी होकर सब सुन रही थी हालांकि मुझे क्या वारिस वगैरह ये समझ नहीं आ रही थी लेकिन उसके बातों को सुनकर गुस्सा जरूर आ रहा था|

नाना जी ने कहा तुम्हें बहुत बधाई हो भाई| खुशी से कमाओ खाओ| सब अपनी

अपनी किस्मत की बात है, मुझे दूसरी पत्नी लाना होता तो मैं कब का ले आया होता| लेकिन अब तो मैं पचास साल का बुजुर्ग हो गया हूँ, हम दोनों बहुत खुश रहते हैं और हम अकेले कहाँ है मेरी नातिन छोटी सीमा हमारे पास है कहकर मेरी ओर इशारा किया|

और भाई अब जमाना भी बदल गया है, हमने अपना सोच भी बदल दिया है | रही मरने के बाद कांधा देने की, तो गाँव में सब हमें ऐसे ही थोड़े पड़े रहने देंगे|

कौन कांधा देगा, कौन दाह संस्कार करेगा ये देखने मरने के बाद कोई नही आता |

लाश, चील कौवे खायेंगे या लावारिस छोड़ दिया जाएगा ये कौन जानता है|

इसके बाद चौकीदार चाचा चला गया | लेकिन मेरा नाना उदास हो गया था | मुझे चौकीदार चाचा के ऊपर बहुत गुस्सा आ रहा था|

सीमा ने कहा देखो ! जमाना कितना बदल गया है, समय -समय की बात है कोरोना ने सब नियम और संस्कार बदल के रख दिया है | चार कांधों के बदले एम्बुलेंस, चीता के बदले जेसीबी से गड्ढा खोदकर दफ़ना दिया जाता है| सारे नियम और संस्कार के बिना भी बड़े-बड़े और घमंड करने वाले लोगों को भी बेटों के हाथ लगाए बिना ही मुक्ति मिल रही है|

आज उसका दौलत और संतान दोनों कुछ काम नही आया |

वो मुलाकात

सुनीता एक स्कूल में अध्यापिका थी । उनके पति फौज में थे ।इसलिए उन्हें बहुत कम ही छुट्टी मिला करता था । सुनीता ही घर परिवार की जिम्मेदारी सम्भालती थी । उसके दो बच्चे थे लिंक और राजू । रिंकि सात साल की थी और राजू चार साल का था । और उनकी बूढ़ी सासू मां । सुबह घर का सारा काम निपटा कर बच्चों को

स्कूल भेजती। सासू मां के लिए दोपहर का भोजन बनाकर रखती, फिर अपनी स्कूटर से स्कूल जाती। उनका स्कूल भी दस बारह किलोमीटर की दूरी पर थी। सुनीता अधिक व्यस्तता के कारण अक्सर देरी से स्कूल पहुंचती। जिसके कारण अपने प्रधानाध्यापक भी नाराज हो जाया करते। हालांकि सुनीता से कुछ कहते नहीं थे। लेकिन उनके व्यवहार से महसूस हो जाता था।

एक दिन रविवार को राजू ने सुनीता से कहा- मम्मी - मम्मी चलो न आज घूमने जाएंगे। सब बच्चे अपने मम्मी पापा के साथ रोज घूमने जाते हैं। बस हमें ही कोई नहीं ले जाता। आप तो दिन भर स्कूल और घर के काम में व्यस्त रहते हो और पापा को तो छुट्टी ही नहीं मिलती। शहर में नया पार्क बना है हमनें

कभी देखा ही नहीं । मेरे दोस्त आदित्य रोज अपने मम्मी पापा के साथ शाम को जाते हैं और झूला झूलते हैं ।

सुनीता बच्चों की बातें सुनकर द्रवित हो उठी बोली- ठीक है बाबा, आज रविवार है । मैं भी आप लोगों को आज शाम घूमाने ले जाउंगी । बच्चे बहुत खुश हुए । शाम को पांच बजे सुनीता अपने बच्चों को लेकर स्कूटर में पार्क पहुंचे । बच्चे तो पहुंचते ही दौड़ कर झूले में बैठकर झूलने लगे । सुनीता मुस्कुराते हुए, पार्क में बैठे -बैठे बच्चों को देख रही थी । तभी पीछे से एक आदमी आया और सुनीता से कहा- मैडम क्या मैं यहाँ बैठ सकता हूँ, सुनीता ने हां हां क्यों नहीं? कहते हुए जैसे

ही उसके तरफ देखा । तो बस देखते ही रह गई. शनि भी आश्चर्य हो गया । कुछ समय बाद शनि ने कहा - सुनीता तुम...! मैं तो पहचान ही नहीं पाया था तुम कितनी दुबली और सांवली हो गई हो...

सुनीता के मुंह कोई शब्द नही निकल रहा था । वह स्तब्ध रह गई थी । उसके मस्तिष्क में दस वर्ष पहले की सारी बातें बादल की तरह उमड़ घुमड़ रही थी और आंखों से हल्की बारिश भी होने लगी । सुनीता कुछ बोलती इससे पहले राजू अपने दोस्त आदित्य के साथ दौड़ते हुए आ गया । मम्मी ये अंकल मेरे दोस्त आदित्य के पापा है, आज उनकी मम्मी नहीं आई है । कहते हुए मम्मी और अंकल का परिचय कराया

। सुनीता ने हाथ जोड़कर नमस्ते कहा । शनि भी प्रतिउत्तर में हाथ जोड़कर सिर हिलाया ।

सुनीता की बेटी रिंकि ने कहा- मम्मी चलो घर चलें, रात होने वाली है दादी घर में अकेली होंगी । और वहाँ से तीनों ,विदा कहकर हाथ हिलाते हुए वहाँ उठकर चल पड़े....

वो बरगद का पेड़

गाँव के बीचों बीच सड़क पर एक विशाल बरगद का पेड़ था | आसपास के बच्चे उसके छांव में खेलते थे | उसके लटकती जड़ों में झूला झूलते थे | गाँव के बुजुर्ग उसके छांव में बैठकर एक दूसरे से सुख- दुःख बांटते, और सुकून पाते थे| वह विशाल वृक्ष सैकड़ों पंछियों के आशियाने थे|

दिन भर पक्षियों के कलरव, बच्चों के कोलाहल से वहाँ का अत्यंत सुखद लगता था | कितने जीव -जतुंओ प्राणियों को जीवन देता वह सैकड़ों वर्ष पुराना बरगद का पेड़ सचमुच बहुत अच्छा लगता था | उसके शीतल छांव में तन - मन शांत हो जाता था |

उस पेड़ पर एक कबूतरी और उसके छोटे- छोटे बच्चे घोसला बनाकर रहते थे |वे अभी उड़ नहीं सकते थे, तीनों अपने घोसला में बैठे हुए थे | उनमें से एक चिड़िया ने अपनी माँ से - मां वहाँ सामने बहुत भीड़ दिखाई लगी है| वहाँ पर क्या हो रहा है, कबूतरी ने कहा- बेटा, आजकल वहाँ सड़क का काम चल रहा है, छोटी सड़क को बड़ा बनाया जा रहा है | कबूतर के बच्चे ने कहा -माँ वहाँ पर बहुत सारे वृक्षों को

भी काट रहे हैं, क्या हमारे बरगद वाले रास्ते को भी चौड़ा बनाया जाएगा? क्या हमारे बरगद को भी काट दिया जाएगा? अगर इसे भी काट देंगे तो हम कहाँ जाएंगे?

कबूतरी बोली- नहीं बेटा, इंसान इतने भी बेरहम नहीं है, हमारा बरगद गाँव का सबसे बड़ा और पुराना वृक्ष है, इसे नहीं काटेंगे तुम चिंता मत करो | और इसी तरह वे अपने घोसले पर बातें कर ही रहे थे|

इतने में एक बड़ी सी गाड़ी वहाँ पर आकर रूका | उसमें से कुछ लोग नीचे उतरे, एक मोटा सा आदमी ,अपना चश्मा उतारकर, बरगद के पेड़ को ऊपर से नीचे तक देखा और एक पतले आदमी की तरफ देखते हुए कहा-

क्या यही वह बरगद का पेड़ है? जिसके बारे में लोग बात कर रहे थे | उस आदमी ने हां साहब कहकर सिर हिलाया | उस आदमी ने पेड़ को बड़े ध्यान से देखा , यह पेड़ लगभग सौ वर्ष पुरानी होगी, इसकी उंचाई पैंतीस फीट होगी, चौड़ाई करीब - करीब दस या बारह फीट होगा | वह थोड़ी देर तक चुप रहा | फिर उसके बाद इंजीनियर से कहा- मशीन से पूरा पेड़ कटवा दो | नहीं कटवाओगे तो सड़क का नक्शा बिगड़ जाएगा और अपने कार में बैठा और चला गया|

अगले दिन सुबह -सुबह एक बड़ा सा मशीन बरगद के वृक्ष के पास आकर खड़ा हुआ | सबसे पहले उसके तना वाले जड़ों को काट दिया गया, फिर उसे समूल जड़ सहित काट दिया गया|

कुछ ही पल में सौ साल का वह पुराना बरगद का वृक्ष चरमरा कर धराशायी हो गया |सारे जीव -जंतु और पक्षी अपनी जान बचा कर उड़ गए | कबूतरी और उसके बच्चे भी जंगल की और उड़ गए | कितने पंछियों का आशियाना उजड़ गया| अण्डे टूट गए, कुछ ही दिनों में वहाँ पर बहुत चौड़ा सड़क बन कर तैयार हो गया |लेकिन आने जाने वालों के लिए सुस्ताने के लिए कोई छाया नही दिख रहा था | दूर- दूर तक केवल सड़क ही सड़क दिखाई दे रहा था |

जूता

एक हमसफ़र.....

आज दादाजी को नींद नहीं आ रही थी | जैसे तैसे करके बड़ी छटपटाहट में रात बिताई | क्योंकि कल सुबह उसे अपने नातिन के पढ़ाई के लिए जाती प्रमाण पत्र बनवाने के लिए तहसील जाना था |सुबह होने

में अभी घड़ी भर बांकी था | लगभग चार बज रहे होंगे, घर में घड़ी भी तो नहीं थी , और रहती भी तो दादाजी को देखना भी तो नहीं आता था | लेकिन अगर दादाजी चांद और सूरज को देखकर जब समय का अंदाजा लगाता था न, तो मज़ाल है घड़ी से एक मिनट का भी फर्क पड़ जाए | चार बजे मतलब चार ही बजा है |

क्योंकि तहसील ऑफिस गाँव से लगभग बीस किलोमीटर की दूरी पर थी |दादाजी पिछले सोमवार को तहसील ऑफिस गये थे, तो वकील साहब ने उसे अगले सोमवार को बुलाया था |इसीलिए आज दादाजी को ठीक समय पर दस बजे तहसील ऑफिस पहुंचना है |गाँव से शहर जाने के लिए केवल एक ही बस

चलती है, वो भी मिनी बस | दस बजे यहाँ से जाती और शाम को पांच बजे फिर वापस आती थी|

उस पर आसपास के बहुत लोग शहर जाने वाले ताक लगाए बैठे रहते थे ,और मिल भी जाता तो बैठने का तो छोड़ो, भाई पैर रखने के लिए भी ठीक से जगह नहीं मिलता था |बस के अंदर जितने लोग ठुंसाये रहते उतने ही लोग बस के ऊपर और अगल - बगल में लटके रहते थे | और सड़क का तो क्या कहने, बरसात के दिन थे, बड़े-बड़े गड्ढे, उस पर पानी भरा हुआ | भैंस अगर देखे तो उसे भी भ्रम हो जाए कि ये सड़क है या तालाब |

अब ऐसे में भैया पैदल चलकर जाने में ही भलाई है | कहीं बस के चक्कर में लेने के देने न पड़ जाए | इसलिए दादाजी अपने सिर पर अपना छोटा सा गमछा बांधा, जेब में कुछ पैसे रखे, अपना बरसाती पनही (जूता) पहना और निकल पड़ा |दादाजी बस के पहुंचने के पहले ही तहसील ऑफिस पहुँच गया | वहाँ दो घंटा इंतजार करने के बाद वकील बाबू आया | दादाजी ने कहा- साहब मेरी नातिन का जाती प्रमाण पत्र बन गया क्या?

वकील अपने मुंह में पान चबा रहा था, कुछ नहीं बोला, दादाजी फिर उनसे पूंछा- साहब

वो कागज़ जो पिछले हफ्ता आपको दिया था वो बन गया क्या?

वकील साहब कुर्सी के पीछे में थूकते हुए कहा- अच्छा बाबा वो जाती प्रमाण पत्र, उसमें तो तहसीलदार साहब का दस्तखत लगेगा | और आज तहसीलदार साहब छुट्टी में है कल आना बेचारा दादाजी भूखे प्यासे दस किलोमीटर चलकर भरी दोपहरी में घर आ गया|

अगले दिन उसी समय पर दादाजी फिर से वकील साहब के पास गया |और पूंछा - वकील साहब मेरी नातिन का प्रमाण पत्र बना क्या? वकील साहब मुंह बिचकाते हुए कहा - दादा ,साहब तो आज भी नहीं आया है, कल आना |

बेचारा दादाजी थक हारकर फिर वापस आ गया|

अगले दिन दादाजी अपने समय पर फिर पहुँच गया|

इस बार तो मैं लेकर ही जाऊंगा, वकील साहब मेरी नातिन का प्रमाण पत्र दो, वकील ने फिर बहाना बनाया |दादाजी ने वकील को धमकाते हुए कहा- मैं तुम्हारी शिकायत जाकर बड़े साहब से करता हूँ,वकील ने कहा बुढ़ऊ तहसील के अंदर केवल वकील लोग ही जा सकते हैं,जाओ!जाओ! तुम्हें चौकीदार धक्के देकर भगा देंगे |दादाजी ने कहा आज बड़े साहब को भी देखूंगा, कैसे वो छुट्टी पर है या नहीं बना रहा है कहते हुए | दादाजी वहाँ से सीधे तहसील के अंदर गया |

अंदर जाकर देखा तो तहसीलदार साहब अपने जगह में बैठा हुआ था| दादाजी को देखते ही उसनें पूछा लाइए, दादाजी किसमें दस्तखत करना है, दादाजी ने कागज आगे बढ़ा दिया, दादाजी ने वकील की सारी बातें तहसीलदार साहब को बताया साहब दादाजी के साथ में आया और वकील को डांट लगाई, सीधा बर्खास्त कर दिया और चेंबर में बैठे सभी वकीलों से कहा- इस प्रकार लाचार और बुजुर्ग लोगों के साथ किसी को अन्याय नहीं करना चाहिए| हमारी नियुक्ति ऐसे ही कार्यों के लिए हुआ है हम ही भ्रष्टाचार करने लगेंगे और आम जनता को परेशान करेंगे तो हमारे देश का क्या होगा?

छुट्टी का समय हो चुका था और तहसीलदार साहब अपने गाड़ी में बैठ कर वहाँ से चले गए |

दादाजी मन ही मन बहुत खुश हुए, हमारे देश में अच्छे लोग अभी भी हैं, घर आकर जाती प्रमाण पत्र अपनी नातिन को दिया और अपना जूता (पनहीं) उतारा | चार दिन तक दस-दस किलोमीटर लगातार आना- जाना करने के बाद उनके जूते का नीचे वाला भाग पूरा फट चुका था | दादाजी मुस्कुराए, आखिर उसका प्रमाण पत्र तो कम से कम बन गया है | |नातिन ने दादाजी के लिए खाना परोसा | खाना खाने के बाद दादाजी सुई- धागा लेकर जूता को सीने बैठ गया |

क्योंकि कल अपने नातिन को बड़े स्कूल में दाखिला कराने भी तो जाना है...

मिटकू

दूर पहाड़ी वाली एक छोटी सी गाँव में, मिटकू और उसकी माँ रहते थे | मिटकू के पिताजी बचपन में ही चल बसे थे | किसी तरह मेहनत मजदूरी करके माँ

कहा, माँ तुम हर दिन घर से बाहर रहती हो | कभी मजदूरी करने तो कभी लकड़ियाँ लाने जंगल चली जाती हो |

मैं सुबह से लेकर शाम तक घर पर अकेला रहता हूँ और ऊब जाता हूँ| तुम मुझे साथ लेकर जाती नहीं हो | आज मैं भी आसपास के जंगल में फल फूल खाने जाऊंगा |

माँ ने कहा जंगल में बहुत खतरा होता है, कई प्रकार के जीव -जंतुओं, सांप - बिच्छुओं का डर रहता है | तुम्हें जो भी चाहिए बता दो, मैं शाम को लेते आऊंगी | मिटकू नहीं मान रहा था, बार -बार वह माँ से जिद करने लगा | मिटकू के जिद करने पर माँ ने कहा- ठीक है तुम इतना ही जिद कर रहे हो तो, मैं जिधर कहूंगी उधर ही जाना | माँ ने कहा- बेटा उत्तर, दक्षिण और पूर्व

दिशा के जंगल में से किसी भी दिशा में आसपास ही चले जाना | लेकिन पश्चिम दिशा में भूल कर भी मत जाना | और कहीं भी जाओगे तो जादा दूर मत जाना आसपास से घूम - घामकर जल्दी घर लौट आना|

ऐसा कहकर माँ जंगल चली गई|माँ के जाते ही मिटकू सोंचा , माँ ने कहा है पश्चिम दिशा में कभी जाना | ऐसा क्या है पश्चिम दिशा में, चलकर तो देखूँ ,

क्या खतरा है पश्चिम में, उसे माँ ने जाने के लिए मना किया था उसी दिशा में चला गया |

रास्ते में उसे बहुत सारे केले का पका पका फल मिला, मिटकू ने जी भरकर खाया | फिर वह और आगे की ओर जंगल में गया तो उसे आम का बगीचा मिला|

मिटकू सोंचा देखो तो कितना मीठा- मीठा आम है, माँ खुद ही इधर आती होगी और मुझे आने से मना किया है ऐसा सोच कर वह एक आम के पेड़ पर चढ़ गया | उसनें कई फल तोड़ कर खाये | फिर नीचे आम के छांव में आराम करने लगा | पेड़ की ठंडी छांव में मिटकू सो गया|

कुछ देर बाद मिटकू को उसका शरीर बहुत भारी लगने लगा, जैसे कोई बड़ा सा पत्थर किसी ने उसके ऊपर रख दिया हो |मिटकू ने हड़बड़ाकर अपनी आंखें खोली | तो एक बड़ा सा अजगर उनके ऊपर कुंडली मार कर बैठा था|अब तो साक्षात् मौत को सामने देखकर मिटकू को मां की याद आने लगी | उसे कुछ भी नहीं सूझ रहा था | मारे डरके उसके हाथ पांव फूलने लगा |

कुछ देर वह चुपचाप लेटा रहा फिर, अपने दोनों हाथों से अजगर को कसकर पकड़ा और झटक कर दूर
फेंक दिया और जान बचा कर घर की ओर भागा | घर में माँ आज जल्दी आ गई थी | वह सीधे दौड़ कर माँ के गले से लिपट गया |और उस दिन से आज तक जहाँ उसे माँ जाने के लिए कहती है, मिटकू उधर ही जाता है...

किटी पार्टी

आज शाम को कालोनी में, एलीना के घर में किटी पार्टी थी | कालोनी के सारी महिलाएं, इकट्ठा होकर अचानक मेरे घर में आ पहुंचे| उनमें से एक महिला सुरूची ने मुझसे कहा- क्या सरिता बहन आप लोगों को यहाँ आए हुए दो साल बीत गए और न तो आप किसी के यहाँ

घूमने जाती हैं और न ही हमें अपने घर बुलाती है | दिन भर अपने घर में ही रहती हो, इसलिए आज हम लोगों ने ये तय किया है कि आज से आपको भी हमारे टीम में शामिल करेंगे |आज एलीना बहन के घर में किटी पार्टी है, हम सब का खाना पीना भी वहीं होगा | आज आपको तो आना ही पड़ेगा | और हाँ इस तरह से सीधी-सादी गऊ माता की तरह आप कब तक रहेंगी, जमाने के साथ बदलना सीखो | भई अब आप शहर में आ गई हैं | कब तक गंवार बनकर रहोगी |

अच्छे से सज - धज कर आइएगा | आज आपको ही हमारे महफ़िल में सबसे अच्छा दिखना है | ऐसा कहते हुए वे चले गए|

सरिता को ये सब बिल्कुल पसंद नहीं था | उनके पति इंजीनियर थे फिर उसनें काम वाली बाई नहीं रखी थी | वह तो घर का काम काज खुद ही करती | बच्चों की देखभाल करती | और समय बच जाती तो किताबें पढ़ती, कुछ कविताएँ लिखती, इस तरह से उसका समय व्यतीत हो जाया करती थी |

उनके कालोनी के महिलाएं आजकल के हाई सोसाइटी, और दिखावे मौज मस्ती वाली थीं | इसलिए वह उन लोगों से दूर रहा करती थी |लेकिन आज तो उनको जाना ही पड़ेगा |क्योंकि नहीं जाएंगे तो पड़ोसी है उनके, सब नाराज़ हो जाएंगे | और पड़ोसियों को नाराज़ करना अच्छी बात नहीं है |

उसने अपनी सबसे अच्छी वाली साड़ी पहनी और तैयार होकर ठीक समय में एलीना के घर पहुँच गई | सभी महिलाओं ने सरिता बहन का स्वागत किया | लेकिन सरिता उन लोगों से अलग दिख रही थी | उनमें से जूही नाम की महिला ब्यूटी पार्लर चलाती थी |अरे! सरिता बहन ये रोली का टीका, और साधारण सी लुक बनाकर आई हो | चलो आज मैं आपको तैयार कर दूं , कहते हुए सरिता के मना करने पर भी उसनें, सरिता का बाल नई तरीका से बनाया और बहुत सारी आर्टिफिशियल गहनों से लाद दिया |अब तो सरिता बहुत ही खूबसूरत लग रही थी | वह भी उनके टीम में अब शामिल हो गई | सबने खूब मौज मस्ती किये | डांस किये,

और रात को बारह बजे अपने -अपने घर चले गए |

सरिता भी अपने घर आ गई, बच्चे भूखे प्यासे इंतजार करते - करते सो गए थे | सरिता के पति तो काम के सिलसिले में तीन दिन के लिए बाहर गया था | सरिता थक गई थी, उसनें बच्चों को जगाकर खाना खिलाया | और आईने के पास जाकर खड़ी हुई | खुद को निहार रही थी,वह बहुत अच्छी

लग रही थी ,लेकिन तभी उसके अक़्स से जैसे आवाज आई, कि सरिता देखो अब तुम भी बदल गई हो | दिखावा और झूठी शान दिखाने वाली महिलाओं के साथ अब तुम भी बदल गई हो अपनी संस्कार, परम्परा को भूल कर उन लोगों के साथ शराब भी पी, डांस किया, मौज

मस्ती में तुम्हें बच्चों की ख़याल तक नहीं रहा |अब तुम बदल गई हो |

सरिता को बहुत भारी -भारी सा लग रहा था, उसनें कपड़े बदले , हाथ- मुंह धोया और माथे पर रोली लगाई | शीशे के पास खड़े हुआ अपने आपको देखा और कहा- नहीं !मैं बदली नहीं! मैं अब भी वही सरिता हूँ अपनी दुनिया में खुश हूँ मैं | झूठी शानों शौकत और दिखावा मुझे पसंद नहीं है, नहीं दौड़ना मुझे औरों कि तरह आधुनिकता के दौड़ में ...

मन का डर

आज बच्चे बहुत जल्दी ही सो गए, उनके स्कूल में आज खेल कूद का कार्यक्रम था इसलिए दीनू और गप्पू दोनों थक गए हैं. उनके पापा तो आज दोस्त के यहाँ शादी में गए हुए हैं |शायद सुबह तक घर आ पाएंगे| रीता ने बच्चों को अच्छे से सुलाकर चादर ओढ़ा दिया |

और रीता बालों में कंघी करने लगी, तभी उसे छत के ऊपर अजीब़ सी आवाज सुनाई दिया | रीता को लगा जैसे कोई व्यक्ति जूता पहनकर चल रहा हो |

एक पल के लिए वह थोड़ा डर गई | उसके बाद सोंचा शायद, कोई चीज होगी ,जो हवा में हिली होगी |और रात को सन्नाटे में उसकी आवाज गूंज रही हो |

कंघी करने के बाद उसनें टीवी बंद किया, और बच्चों के पास आकर लेट गई| अभी ठीक से नींद भी नहीं पड़ी थी और फिर से वही आवाज सुनाई देने लगी |रीता पूरी तरह से डर गई, लेकिन उसनें अपने आप को संभाला इस

तरह से मुझे डरना नहीं चाहिए| जाकर देखूँ तो, आखिर छत के ऊपर कौन है?

अभी कुछ दिन पहले ही हम लोग यहाँ शिफ्ट हुए हैं, इसलिए मुहल्ले में किसी से भी अच्छे से जान पहचान नहीं हुआ है | क्या करूँ? कहाँ जाऊँ ये जरूर कोई चोर ही हो सकता है| रीता ने एक हाथ में टार्च रखी और दूसरे हाथ में बल्ला | कहीं सामने आ गया तो, उसकी जान ले लूंगी |

फिर थोड़ी देर कान लगाकर सुनने लगी, अब आवाज थोड़ी धीमी आ रही थी लेकिन एक ही लय में ठक् ठक् ठक् | रीता मन ही मन सोंचने लगी,

अरे! ये चोर होता तो इस तरह एक ही सुर में आवाज थोड़े ही करती | कहीं ये कोई भूत - प्रेत

तो नहीं |अब तो रीता और भी डर गई, फिर भी उसनें बच्चों को नहीं जगाया, अगर बच्चे जाग जाएंगे तो वो भी डर जाएंगे | इसलिए बच्चों को नही जगाऊंगी |अब उनसे रहा नहीं जा रहा था, उसनें हिम्मत जुटाकर छत के ऊपर जाने की ठान ली |

वह धीरे -धीरे हनुमान चालीसा पढ़ते हुए छत की ओर आगे बढ़ी | चन्द्रमा की मद्धम रोशनी आ रही थी |धीरे से दरवाजा खोला, आसपास देखा कुछ दिखाई नहीं दिया |वह दबे पाँव आगे बढ़ी, आसपास नज़र दौड़ा कर देखा, न भूत दिखा न चोर |फिर छत की मुंडेर की तरफ आंखें घुमा कर देखा, तो उसमें एक छड़ लटका हुआ था | हवा के संपर्क में आते ही वह, दरवाजे के पीछे भाग में टकरा रही थी |और बीच-

बीच में हवा चलने के कारण उसमें से एक लय में ठक् ठक् की आवाज आती थी |

अरे! ये क्या? रीता को अपनी मूर्खता पर हंसी आई |दर असल आज शाम को वह छत पर बंदर भगाने आई थी | और डंडे को छोड़ कर चली गई थी, उसी डंडे को गप्पू और दीनू ने खेलते- खेलते रस्सी से बांधकर लटका दिया है |क्षहवा चलने पर डंडा झूल रही है और आवाज कर रही है | मन में डर का भ्रम पालने से हर चीज़ डरावनी ही लगती है |

इसीलिए हमें मनगढंत, सवाल जवाब अपने ही अंदर में पालना नहीं चाहिए | बल्कि कारण का अच्छे से पता लगाना चाहिए|

इन सबके चक्कर में रात के एक बज चुके थे ,

बीच में हवा चलने के कारण उसमें से एक लय में ठक् ठक् की आवाज आती थी |

अरे! ये क्या? रीता को अपनी मूर्खता पर हंसी आई |दर असल आज शाम को वह छत पर बंदर भगाने आई थी | और डंडे को छोड़ कर चली गई थी, उसी डंडे को गप्पू और दीनू ने खेलते- खेलते रस्सी से बांधकर लटका दिया है |क्षहवा चलने पर डंडा झूल रही है और आवाज कर रही है | मन में डर का भ्रम पालने से हर चीज़ डरावनी ही लगती है |

इसीलिए हमें मनगढंत, सवाल जवाब अपने ही अंदर में पालना नहीं चाहिए | बल्कि कारण का अच्छे से पता लगाना चाहिए|

इन सबके चक्कर में रात के एक बज चुके थे ,

रीता नीचे आई, और निश्चिंत होकर सो गई |

सुबह के छः बजे दीनू की पापा ने दरवाजा खटखटाया | तब जाकर रीता की आंख खुली, दीनू के पापा बोला - अरे आज तुम लोग अभी तक सो रहे हो |मैं गाँव से आ गया| बच्चों के स्कूल का समय हो जाएगा, चलो !चलो उठो|

रात को खाना परोसते हुए रीता मन ही मन अपने डर और बेवकूफ़ी पर अकेले ही मुस्कुरा रही थी | मैं आज तक कभी नहीं डरी थी जितना कल रात को डर गई थी | उस रात की बात मैंने अभी तक दीनू के पापा को नहीं बताई है |

मददगार युवक

गाँव के महाजन की शादी में पूरा गाँव बराती बनकर गया था | बड़े धूमधाम से ब्याह हुआ, शहनाई और बाजे गाजे के साथ दुल्हन की डोली लेकर सब नगर की ओर लौट गए | उसी काफ़िले में संतराम नाम का एक युवक भी गया हुआ था | वह एक पैर से लंगडाता था इसलिए वह धीरे - धीरे चल रहा था | एक बार बचपन में खेलते - खेलते वह गिर गया था जिसके कारण उसके दाहिने पैर की हड्डी टूट गई थी | सही समय पर ईलाज नही मिलने के कारण हड्डी जुड़ नहीं पाया था और तबसे वह बैशाखी के सहारे चलता था |

संतराम अपने धुन में चलता हुआ जा रहा था तभी अचानक उसे किसी की आवाज सुनाई दिया | वह व्यक्ति मदद के लिए पुकार रहा था | कोई मेरी मदद करो मैं इस सूखे कुंए में गिर गया हूँ | कृपा करके मुझे यहाँ से बाहर निकालो | संतराम वही पर थोड़ा रूककर आवाज ध्यान से सुनने लगा | थोड़ी देर बाद पुनः वही पुकार सुनाई दिया | कोई भलेमानस मुझे कुंए से बाहर निकालो, मेरी आवाज सुनो |

संतराम इधर -उधर देखा, उसे थोड़ी ही दूरी पर कुंआ दिखाई दिया | संतराम उस कुंए के पास गया, और झांककर देखा, नीचे में एक आदमी गिरा हुआ है | कुंए में पानी नहीं है , संतराम को झांकते हुए देखकर

उसके आंखों में उम्मीद की किरण नजर आने लगी |

उसनें हाथ जोड़कर कहा भाई मुझे किसी भी तरह से इस कुंए से बाहर निकालो नहीं तो मैं मर जाऊंगा | संतराम ने उस व्यक्ति को धीरज बंधाया, भाई आप चिंता न करें मैं किसी भी तरह आपको इस कुंए से अवश्य बाहर निकालूंगा | संतराम आसपास नजर दौड़ाकर देखा, दूर - दूर तक कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था | संतराम के पास कुछ भी समान नहीं था, कुंए से बाहर निकालने के लिए रस्सी वह कहाँ से लाए | आसपास में कोई लताएँ भी नहीं था | वह निराश होने लगा , और भगवान से प्रार्थना करने लगा |अचानक उसे ख़याल आया कि उसने अपने सिर पर पगड़ी बांध रखा है | उसनें झट से अपनी

पगड़ी उतारी और उसका एक छोर कुंए में डाला, लेकिन कुआँ बहुत गहरा था, इसलिए नीचे तक नही पहुँच सकता था |संतराम ने उसे बीच से बराबर दो हिस्से में फाड़ दिया, जिससे उसकी लंबाई दो गुना हो गया | अब पगड़ी उस व्यक्ति तक आसानी से पहुंचे गया | संतराम पूरा बल लगा कर रस्सी खिंचने लगा, धीरे - धीरे करके उसे बाहर निकाला |संतराम बहुत थक गया, लेकिन वह बहुत खुश हुआ कि उसने आज किसी मरते हुए इंसान की जान बचाई है |

बाहर निकलते ही उस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर कर उसको धन्यवाद दिया | और अपना परिचय दिया, अरे! यह तो काशी नगर का प्रसिद्ध वैद्यराज निकला |

वैद्य राज ने बताया कि - वह पास के गाँव में किसी का ईलाज करने जा रहा था, रास्ते में उसे बहुत प्यास लगी थी | इसलिए वह कुंए के पास आया था, कुंए में झांकते समय अचानक उसका पैर फिसल गया और मैं गिर गया | पिछले तीन दिनों से मै भूखा प्यासा कुएं में पड़ा था, किसी ने मेरी आवाज नहीं सुनी |

राजवैद्य ने कहा - भाई मैं तुम्हारे लिए कुछ करना चाहता हूँ, वैद्य राज ने संतराम का पैर देखा तो कहा भाई आप मेरे साथ चलो मैं तुम्हारे पैर को पूरी तरह से ठीक कर सकता हूँ | भाई कृपा करके तुम मेरे साथ चलो | ऐसा कहकर उसे अपने साथ ले गया |वैद्य राज ने संतराम के पैर में जड़ी बूटियों का लेप लगाया

वैद्य राज ने बताया कि - वह पास के गाँव में किसी का ईलाज करने जा रहा था, रास्ते में उसे बहुत प्यास लगी थी | इसलिए वह कुंए के पास आया था, कुंए में झांकते समय अचानक उसका पैर फिसल गया और मैं गिर गया | पिछले तीन दिनों से मै भूखा प्यासा कुएं में पड़ा था, किसी ने मेरी आवाज नहीं सुनी |

राजवैद्य ने कहा - भाई मैं तुम्हारे लिए कुछ करना चाहता हूँ, वैद्य राज ने संतराम का पैर देखा तो कहा भाई आप मेरे साथ चलो मैं तुम्हारे पैर को पूरी तरह से ठीक कर सकता हूँ | भाई कृपा करके तुम मेरे साथ चलो | ऐसा कहकर उसे अपने साथ ले गया |वैद्य राज ने संतराम के पैर में जड़ी बूटियों का लेप लगाया

और संतराम का पैर पूरी तरह से ठीक हो गया | अब वह अपने दोनों पैरों से चलने लगा |

संतराम बहुत खुश हुआ और अपने घर लौट आया | जो हमेशा लोगों की मदद करता है उसका मदद भगवान करता है |

सुरेखा नवरत्न , सहा.शिक्षक

गृह जिला – जांजगीर- चांपा

कार्यस्थल- शा. प्रा. शाला- छिर्रा

विकास खण्ड -बिलाईगढ़,

जिला- बलौदाबाजार (छ.ग.)

मो. नं. 7611172332.